ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की प्रातिनिधिक कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन

મમતા કાલિયા તથા વર્ષા અડાલજા કી પ્રાતિનિધિક કહાનિયોં કા તુલનાત્મક અનુશીલન

MAMTA KALIA AUR VARSHA ADALAJA KI PRATINIDHIK KAHANIYON KA TULANATMAK ANUSHILAN

SYNOPSIS SUBMITED TO MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF PHILOSOPHY IN HINDI

मंगलूरू विश्वविद्यानिलय की
पी एच-डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधनिदेशक:
डॉ.श्रीधर हेगडे
विभागाध्यक्ष
फ़ील्ड मार्शल के.एम.कार्यप्पा कॉलेज,
मडिकेरी

शोधार्थी:
श्रीमती भैरवी आर पंड्या
अनुक्रमांक: 166302702

Research Guide
Dr. Shridhar Hegde
Head of the Department
Field Marshal K.M. Cariappa College
(A Constituent College of
Mangalore University)
Madikeri-571201
Karnataka

Research Scholar
Mrs. Bhairavi R Pandya
Reg No. 166302702
Lecturer in Hindi Department
Poornaprajna College
Udupi-576101
Karnataka

स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र विश्वविद्यानिलय कॉलेज, मंगलूरू

DEPARTMENT OF POST GRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY

2022

ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की प्रातिनिधिक कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन

प्रस्तावना :

मानव सामाजिक प्राणी है। वह समाज में अपना जीवन बिताता है तथा अपनी विचार धारा के साथ समाज से जुडा रहता है । वह अपने तर्क से कलम का सहारा लेकर अपने विचार प्रस्तुत करता है। मनुष्य ने समाज में बदलाव लाने के लिए कलम तथा तलवार का उपयोग किया। तलवार की तुलना में कलम द्वारा अपने विचारों को प्रस्तुत करके लाया गया बदलाव ज्यादा शाश्वत रहा। उसने अपने मन में चल रहे विचारों को साहित्य द्वारा प्रस्तुत किया। साहित्य की रचना मानव जीवन में घटित घटनाओं का एवं अपने काल्पनिक तर्क को शब्दबद्ध किया हुआा लिखित रूप है। मानव समाज और साहित्य एक दूसरे के दर्पण हैं। साहित्य और समाज के बीच जो जुडती कडी के रूप में आने वाली बात है वह है - साहित्यकार का अपना व्यक्तित्व। लेखक पर अपने युग का प्रभाव रहता है। उन प्रभावों को प्रभावित करने वाले तत्व हैं - सांस्कृतिक परंपराएँ, समय तथा स्थान। लेखक अपनी सोच के अनुसार समाज को परखता है। वह अपने विचारों को शब्दों द्वारा प्रस्तुत करता है। लेखक रचित साहित्य समाज का चित्रित स्वरूप है। वह अपने विचारों द्वारा चित्रित समाज में यथार्थ के साथ-साथ प्रगति की ओर अंगूली निर्देश करता है। अतः हम कह सकते हैं कि समाज और साहित्य एक दूसरे के दर्पण हैं। साहित्य और समाज का अटूट संबंध है।

मैं हिन्दी साहित्य की छात्रा हूँ। गुजरात के राजकोट शहर से हूँ। बचपन से ही गुजराती साहित्य में वर्षा अडालजा की कहानियाँ पढ रही थी। उनकी कहानियों में प्रस्तुत विचार-भाव से ज्यादा प्रभावित हुई। वर्षा अडालजा की कहानियों में नारी का बदलता हुआ रूप तथा पारिवारिक संघर्ष में नारी का स्थान से मैं प्रभावित हुई। उनकी कहानियों में पारिवारिक संघर्ष में नारी परिवार से विच्छेदित होकर नहीं बलकि परिवार के साथ संघर्ष करती दिखाई देती है। मेरे स्नातक एवं स्नात्तकोत्तर अध्ययन के दौरान हिन्दी साहित्य में ममता कालिया जी का जीवन वृतांत और विचार धारा पढते समय ममता कालिया और

वर्षा अडालजा की विचार धारा में ज्यादा साम्यता मिलीं । दोनों लेखिकाओं की रचना में महानगरीय परिवेश तथा स्त्री-पुरूष के संबंधों के वर्णन में साम्यता मिली । मेरी इच्छा थी कि अगर हो सके तो मैं इन दोनों लेखिकाओं की कहानियों का तुलनात्मक अभ्यास करूँ । इस प्रकार मैंने संशोधन के विषय के रूप में " ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की प्रातिनिधिक कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन" के अंतर्गत अनुसंधानात्मक कार्य करने का प्रयास किया है ।

शोधकार्य की प्रेरक भावभूमि एवं विषय चयन:

हिन्दी भाषा को हम राष्ट्रभाषा का दर्जा देते हैं । हिन्दी भाषा के प्रति मेरी गहरी आत्मियता ने मुझे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपने शोध कार्य में आगे बढने का प्रोत्साहन मिला । बचपन से ही मुझे कहानी-साहित्य से ज्यादा लगाव रहा है । मनुष्य के समूह से परिवार की रचना होती है । मैं सोचती हूँ कि परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई एवं नींव है । मनुष्य अपनी आवश्यक्ताओं के अनुसार परिवार से जुडा रहता है। परिवार का बनना-बिगडना मनुष्य की आवश्यक्ताओं पर आधारित है । परिवार का संचालन समाज द्वारा दिए गए मानदंड पर आगे बढता है । मैंने अपने शोध कार्य में पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक मूल्य, परिवार में नारी के बदलते हुए रूप एवं परिवार से जुडे सदस्यों की मानसिकता का मनोविज्ञान आदि को ध्यान में रखकर कार्य किया गया है ।

वर्तमान युग बडी तीव्रता से बदल रहा है । पारिवारिक संबंधों में परंपरागत तथा नवीन मूल्यों का टकराव, संक्रमणशीलता और संघर्ष दिखाई दे रहे हैं । वर्तमान समय में मनुष्य की भौतिक सुख के प्रति बढ़ती रूचि और पूँजीवाद ने एक नई अर्थ संस्कृति को जन्म दिया है । इस अर्थ संस्कृति की वजह से ग्राम्य-नगरीय एवं महानगरीय परिवेश में पारिवारिक मूल्यों के स्तर पर संघर्ष दिखाई देता है।

मेरे अनुसंधान कार्य की मुख्य प्रेरणा मुझे आदरणीय गुरू शोध- निदेशक डॉ. श्रीधर हगडे से मिली हैं । इतना ही नहीं डॉ. नागरत्ना जी एवं डॉ. सुमा टी. आर (मंगलूर

महाविद्यालय), डॉ. अनसूया करकेरा (निवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष, विजया कालेज, मुकि) तथा गुजराती साहित्य के लिए गुजरात महाविद्यालय के हाल निवृत्त भाषा विभाग के डीन एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. जसवंत पंड्या जी से मिली । श्रीमती पी.एन.आर. शाह महिला कालेज, पालीताणा की गुजराती विभागाध्यक्षा डॉ. माधवी परमार से मिली । मैंने डॉ. श्रीधर जी का संपर्क किया और अपने शोधकार्य के विषय में विस्तार से विचार-विमर्श किया । डॉ. श्रीधर हगडे जी ने अपनी सूक्ष्म शोध दृष्टि से मुझे निर्देशन दिया। मुझे डॉ. जसवंत भाई पंड्या जी का संपर्क करवाने हेतु मैं डॉ. श्रीधर हगडे जी की शुक्रगुज़ार हूँ। परिणाम स्वरूप मेरा हिन्दी साहित्य में ममता कालिया तथा गुजराती साहित्य में वर्षा अडालजा की कहानियों पर तुलनात्मक कार्य करना शुरू हुआ। इस क्षेत्र में अनुसंधान की संभावनाएँ नजर आई । मेरे विषय चयन के पीछे मेरा उद्देश्य यह रहा है कि इन सशक्त लेखिकाओं की सामाजिकता से संबंधित आयाम उभरकर सामने आए ।

प्रस्तुत विषय की उपादेयता एवं प्रासंगिकता :

ममता कालिया और वर्षा अडालजा क्रमशः हिन्दी और गुजराती की सुप्रसिद्ध महिला कहानीकार हैं । वर्तमान समय में उनकी रचनाएँ प्रासंगिक है । उनकी कहानियों में मध्यम वर्ग के यथार्थ को उद्घाटित किया गया है । इन दोनों लेखिकाएँ, कहानीकार तथा महिला लेखिका होने के नाते नारी की वेदना-व्यथा को सचोट रूप से प्रस्तुत किया है । इनकी कहानियों के पात्रों का संघर्ष प्रस्तुत हुआ है । यानि पात्र ‘एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी’ नहीं हैं । जिस प्रकार समुद्र में डुबकी लगाने वाले हर एक को मोती प्राप्त नहीं होता उसी प्रकार कुछ पात्र सिद्धांतों के विरूद्ध दिखाई देते हैं । मनुष्य रूप की साहजिक कमियों से भरे हैं । उनकी कहानियों में नारी के बदलते रूप को बताया गया है । पुरानी मान्यता थी कि स्त्री के जीवन में वैधव्य आ जाने से उसके जीवन को पूर्णविराम लग जाता था। आज समय बदल गया है आज विधवा स्त्री घर की चार दिवारों में कैद न रहकर बाहर निकलती है और अपने पति यानि पुरूष पात्र की गैरहाज़री में समाज में अपनी नई पहचान बनाती है ।

शोध की उपलब्धियाँ :-

इन लेखिकाओं की रचनाओं में जीवन के प्रति अडिग आस्था, भविष्य के सपने और वर्तमान जीवन की नवीनता निरूपित करना इनके कहानी-साहित्य का उद्देश्य माना जा सकता है । आज के यंत्र-युगीन परिवेश में व्यक्ति अजनबी और एकाकी बन गया है । वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है । इनकी कहानियों में मनुष्य की जिजीविषा को यथार्थ रूप दिया गया है। मुझे लगता है कि इस प्रकार के शोध-कार्य द्वारा हम निम्नाखित बातों की चर्चा कर सकते हैं,

जैसे-

- ❖ अहिन्दी प्रदेश में हिन्दी भाषा के साथ तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
- ❖ गुजराती साहित्य की अमूल्य धरोहर को प्रकाश में लाने की कोशिश की गई है।
- ❖ हिन्दी साहित्य और गुजराती साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।
- ❖ गुजराती साहित्य का हिन्दी साहित्य के विराट क्षेत्र में लाया गया है ।

पूर्ववर्ती शोध-कार्य :-

- ❖ ममता कालिया: जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व-डॉ. फ़ैमिदा बीजापुरे (शिवाजी विश्वाविद्यालय कोल्हापुर, विनय प्रकाशन, कानपुर-२००४)
- ❖ स्त्री एवं सामाजिक प्रसंग-ममता कालिया का कथा साहित्य- पीटर शागि (वर्धा,केन्द्रीय विश्व विद्यालय, महाराष्ट्र-२०१८)
- ❖ शोर के विरूद्ध सृजन-ममता कालिया का रचना संसार-जितेन्द्र श्रीवास्तव-संपादक (वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली-२०१७)
- ❖ वर्षा अडालजा नुं कथा साहित्य- डॉ. पंकज आर. पटेल
- ❖ बे स्त्री वार्ताकारो:एक अभ्यास-वर्षा अडालजा-इला आरब महेता-२०१४
- ❖ वर्षा अडालजा अने हिमांशी शेलतनुं वार्ता विश्व-एक अध्ययन

❖ डेफिनेशन ऑफ़ ह्युमन रिलेशनशीप्स इन द सेलेक्ट नॉवेल्स ऑफ़ सुधा मुर्ति एन्ड वर्षा अडालजा

पूर्ववर्ती शोध-कार्य में जो शोध-कार्य नहीं हुआ, उन विषयों पर मैंने साहित्यिक मूल्यों से अवगत होकर प्रस्तुत कार्य आरंभ किया । " ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की प्रातिनिधिक कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन" विषय को यथार्थता के साथ प्रस्तुत करने का मेरा नम्र प्रयास है ।

इस विषय पर अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नाखित प्रश्न उभर रहे थे :

❖ इन दोनों लेखिकाओं के जीवन पर साहित्य का कैसा प्रभाव हुआ?

❖ इन दोनों लेखिकाओं की कहानियों की क्या विशेषता है?

❖ इन दोनों लेखिकाओं ने अपने साहित्य में कौन-सी समस्याओं को चित्रित किया है?

❖ साहित्य में इन दोनों लेखिकाओं का स्थान एवं रचनाओं की प्रासंगिकता क्या रही है?

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

प्रस्तुत शोध विषय का अनुशीलन करते समय इस विषय के विविध आयाम मेरे सामने आए जो स्वतंत्र रूप से अनुसंधान के विषय हो सकते हैं । प्रस्तुत अनुसंधान की अपनी सीमा होने के कारण उन विविध आयामों का विस्तृत विवेचन करना साध्य नहीं है ।

नए अनुसंधानकर्ता भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कर सकते हैं-

❖ उभय लेखिकाओं के साहित्य में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध ।

❖ उभय लेखिकाओं के उपन्यासों में सम-सामायिक चेतना ।

❖ उभय लेखिकाओं की कहानियों में नए विमर्श: बाल विमर्श एवं वृद्ध विमर्श । आदि ।

शोध-प्रबंध की रूपरेखा:- प्रस्तुत शोध-कार्य को अध्ययन की सुविधा के लिए छः अध्यायों में विभाजित किया गया है, जैसे,

अनुक्रमणिका

ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की प्रातिनिधिक कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन

प्रथम अध्याय : हिन्दी तथा गुजराती कहानी साहित्य का इतिहास

द्वितीय अध्याय : ममता कालिया की कहानियों का वस्तु विश्लेषण

तृतीय अध्याय : वर्षा अडालजा की कहानियों का वस्तु विश्लेषण

चतुर्थ अध्याय : ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में नारी का बदलता हुआ स्वरूप

पंचम अध्याय : ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में महानगरीय जीवन का चित्रण

षष्ठ अध्याय : ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति

सप्तम अध्याय : ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में भाषागत शिल्प :

उपसंहार

परिशिष्ट - ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आधार ग्रंथ सूचि

संदर्भ ग्रंथ सूचि

पत्र-पत्रिकाएँ तथा वेब-जाल

ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की प्रातिनिधिक कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन

प्रथम अध्याय : हिन्दी तथा गुजराती साहित्य का इतिहास

१.१ तुलनात्मक अनुसंधान-अर्थ एवं परिभाषा

१.१.१ अर्थ

१.१.२ भारतीय एवं पाश्चात्य मत

१.१.३ तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र

१.१.४ तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका

१.२.१. कहानी का अर्थ और परिभाषा

१.२.२ कहानी का स्वरूप

१.२.३ हिन्दी कहानी साहित्य का काल विभाजन

१.२.३.१ कहानी के भेद

१.२.३.२ प्रेमचंद पूर्व युग (१९०१ से १९१४ तक)

१.२.३.३ प्रेमचंद युग (१९१६ से १९३६-कहानी का विकास काल)

१.२.३.४ प्रेमचंदोत्तर युग

१.२.३.५ नई कहानी:

१.२.३.५.१ सचेतन कहानी

१.२.३.५.२ सहज कहानी

१.२.३.५.३ समांतर कहानी

१.२.३.५.४ जनवादी कहानी

१.२.३.५.५ २१वीं शतीं की समकालीन कहानियाँ

१.२.३.५.६ समकालीन कहानियों में ममता कालिया का स्थान एवं योगदान

१.२.४.१ गुजराती कहानी साहित्य का काल विभाजन

१.२.४.२ गुजराती गद्य के आविर्भाव से गोवालणी तक

१.२.४.३ गोवालणी से तणखामंडळ तक

१.२.४.४ तणखामंडळ से गृहप्रवेश तक

१.२.४.५ आधुनिक खोखलेपन का विरोध करती परिष्कृत कहानी

१.२.४.६ दलित चेतना प्रवाह

१.२.४.७ समकालीन कहानियों में वर्षा अडालजा का स्थान एवं योगदान

१.३ निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

२.१ ममता कालिया की कहानियों का वस्तु विश्लेषण

२.१.१विषयवस्तु विश्लेषण : प्रक्रिया एवं सिद्धांत

२.१.२ ममता कालिया की कहानियाँ- २००५-भाग १ (०३ कहानी)

२.१.३ ममता कालिया की कहानियाँ- २००६-भाग २ (०४ कहानी)

२.१.४ काके दी हट्टी-२०१०- (१७ कहानियाँ)

२.१.५ खुशकिस्मत-२०१३ (१५ कहानियाँ)

२.१.६ थोडा-सा प्रगतिशील (१४ कहानियाँ)

२.२ निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : वर्षा अडालजा की कहानियों का वस्तु विश्लेषण

३.१ प्रस्तावना

३.१.१वर्षा अडालजानी श्रेष्ठ वार्ताओ (२०१५)- (२१ कहानियाँ)

३.१.२ हरिकथा अनंता (२०१७) (२१ कहानियाँ)

३.१.३ स्वप्न प्रवेश (२०२०) (१२ कहानियाँ)

३.२ निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में बदलता हुआ नारी का रूप

४.१ स्त्री-विमर्श का भारतीय परिप्रेक्ष्य

४.१.१ सामाजिक संरचना में स्त्री का अस्तित्व

४.१.२ ममता कालिया की कहानियों में रूढ़िगत परंपराओं का संघर्ष

४.१.३ वर्षा अडालजाकी कहानियों में रूढ़िगत परंपराओं का संघर्ष

४.१.४ ममता कालिया की कहानियों में नारी अस्मिता की पहचान

४.२ ममता कालिया और वर्षा अडालजा की कहानियों में साम्य और वैषम्य

४.३ निष्कर्ष

पंचम अध्याय : ममता कालिया और वर्षा अडालजा की कहानियों में महानगरीय जीवन

५.१ युगीन परिवेश का चित्रण

५.१.१ महानगरीय जीवन के प्रदान में सात रंग की स्मृतियों का इन्द्रधनुष :

५.१.२ आवास की समस्या

५.१.३ आर्थिक समस्या

५.१.४ समज़दार युवा वर्ग

५.१.५ अविवाहित जीवन की समस्या : अकेलापन

५.१.६ व्याभिचार और तलाक

५.१.७ आतंकवाद

५.१.८ साहित्य

५.१.९ धार्मिकता का संघर्ष

५.१.१० प्रशासन

५.१.११ भ्रष्टाचार की समस्या

५.१.१२ मानवता

५.१.१३ छोटे बच्चों की समस्या

५.१.१४ महानगरीय जीवन के साथ बदलता समाज : नागरीक सहजीवन

५.२ निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : ममता कालिया और वर्षा अडालजा की कहानियों में मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति

६.१ प्रस्तावना

६१.१ आधुनिक युग में मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा

६.१.२ **मनोविश्लेषण अर्थ और परिभाषा**

६.२ फ़्रायड की मनोवैज्ञानिक पद्धति- अचेतन मस्तिष्क

६.२.१ लिबिडो

६.२.२ इडिपस

६.२.२.१ आरोपण (Projection)

६.२.२.२ तादात्मयीकरण (Identification)

६.२.२.३ स्थानान्तरीकरण (Transference)

६.२.२.४ स्थिरता (Fixation)

६.२.२.५ प्रत्यावर्तन (Regression)

६.२.२.६ उदात्तीकरण (Sublimation)

६.२.२.७ स्वप्न (Dreams)

६.२.२. रेशनाईलेज़शन (Rationalization)

६.३ जुंग की मनोवैज्ञानिक पद्धति

६.३.१ अचेतन मस्तिष्क

६.३.२ अंतर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व

६.३.३ उभयमुखी व्यक्तित्व

६.४ कहानी साहित्य में मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति

६.५ ममता कालिया और वर्षा अडालजा की कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

६.५.१ मानसिक अंतर्द्वन्द्व

६.५.२ कुंठा

६.५.२.१मानसिक कुंठा

६.५.२.२ दैहिक कुंठा

६.५.२.३ हीनताजन्य कुंठा

६.५.३ दमनकारी ग्रंथियों का उदय

६.५.३.१ श्रेष्टता ग्रंथि

६.५.४ स्वप्न सिद्धांत

६.५.५ एकाकीपन का संघर्ष

६.५.६ मानवीय संबंधों का विघटन

६.५.६.१ वैवाहिक संबंधों का विघटन

६.५.७ आत्मपीडन/परपीडन से ग्रस्त जीवन

६.५.८ नैतिक मूल्यों का ह्रास

६.५.९ आत्मनिर्वासन

६.५.१० आक्रमकता

६.६ निष्कर्ष

सप्तम अध्याय

ममता कालिया एवं वर्षा अडालजा की कहानियों में भाषा-शैली

७.१ममता कालिया एवं वर्षा अडालजा की कहानियों में शिल्पगत विशेषता

७.१.१ सपाटता

७.१.२ प्रतीकात्मकता

७.१.३ सांकेतिकता

७.१.४ बिंबविधान

७.२ ममता कालिया एवं वर्षा अडालजा की कहानियों में भाषागत विशेषता

७.२.१ तत्सम शब्द

७.२.२ तद्भव शब्द, देशज, विदेशी एवं युग्म शब्द

७.२.३ अलंकृत भाषा

७.२.४ मुहावरे एवं लोकोक्ति

७.३ निष्कर्ष

उपसंहार

परिशिष्ट ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आधार ग्रंथ

सहायक ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

इंटरनेट-वेब जाल

प्रथम अध्याय: हिन्दी तथा गुजराती कहानी साहित्य का इतिहास

प्रथम अध्याय में हिन्दी तथा गुजराती साहित्य में कहानी-साहित्य के विकास पर संक्षिप्त दृष्टि्पत करते हुए तुलनात्मक रूप में नई कहानी के दो भिन्न (हिन्दी-गुजराती) भाषाओं के विकासक्रम तथा लेखिकाएँ (ममता कालिया-वर्षा अडालजा) के स्थान की चर्चा की गई है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

द्वितीय अध्याय: ममता कालिया की कहानियों का वस्तु विश्लेषण

ममता कालिया लगभग पीछले पाँच दशकों से कहानियाँ एवं उपन्यासों में अपना योगदान दे रही हैं । ममता कालिया की कृतियों में ज्यादातर नारीवादी स्वर नहीं दिखाई देता । उनकी कृतियाँ यथार्थ से ज्यादा नज़दीक रहती हैं । उनकी कहानियों में स्त्री की स्थिति पर रोशनी डाली गई है । इस अध्याय में उनकी विविध कहानियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । ममता जी रचित कहानियों के कथ्य का विश्लेषण किया गया है । यहाँ कहानियों की की संख्या ज्यादा होने की वजह से मैंने अपने शोधकार्य में उनकी कुछ प्रातिनिधिक कहानियों की चर्चा करके विश्लेषण एवं संश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

तृतीय अध्याय: वर्षा अडालजा की कहानियों का वस्तु विश्लेषण

इस अध्याय में मैंने गुजराती साहित्य में वर्षा अडालजा रचित कहानियों का विश्लेषण किया है । यहाँ कहानियों की संख्या ज्यादा होने की वजह से उनकी प्रातिनिधिक कहानियों को लिया गया है । विषय वस्तु के आधार पर संक्षिप्त चर्चा की गई है । बाद में उन कहानियों का विश्लेषण एवं संश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय: ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में नारी का बदलता हुआ स्वरूप

इस अध्याय में मेरा प्रयास रहा है कि उभय लेखिकाओं के कथा साहित्य द्वारा सामाजिकता के सभी पहलूओं की चर्चा करूँ । यहाँ स्त्री का बदलता हुआ रूप वर्णित किया

गया है । समय के साथ स्त्री की पतिव्रता एवं सतीत्व की परंपरागत धारणा दूर हो गई । बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार नैतिकता के संबंध में एक से ज्यादा दृष्टिकोण आवश्यक है । परंपरागत मूल्यों में बदलाव आने से रिश्तों में उदासी देखी गई । उसी उदासीनता ने नारी को कुछ क्षेत्रों में विद्रोहित कर दिया । आज के इस अर्थप्रधान युग एवं पाश्चात्यीकरण की वजह से रूढियुक्त नारी रूढियों के बंधन से मुक्त होना चाहती है । वास्तव में देखा जाए तो नारी अपने खोये हुए अस्तित्व को प्राप्त करने का संघर्ष करती है, और नारी का बदलता हुआ रूप देखने को मिलता है। । भारतीय परिप्रेक्ष्य तथा सामाजिक संरचना में स्त्री के अस्तित्व की चर्चा की गई है ।

इस अध्याय के अंत में ममता कालिया एवं वर्षा अडालजा की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । साम्य और वैषम्य की चर्चा की गई है । अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

पंचम अध्याय: ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में महानगरीय जीवन का चित्रण :

पंचम अध्याय में मैंने स्त्री और समाज को जोडकर स्त्री को समाज का अभिन्न अंग बताया है । दोनों लेखिकाओं की रचनाओं में महानगरीय जीवन के संघर्ष का वर्णन ज्यादा है । स्वतंत्रता के पश्चात देश की अर्थव्यवस्था को असर करने वाले तत्व-पूँजीवादी शक्तियों की वजह से खडे हुए -बेरोज़गारी, महँगाई, रिश्वतखोरी, आतंकवाद और प्रशासन आदि तत्वों की चर्चा की गई है । अंत में विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय: ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति

षष्ठ अध्याय में उभय लेखिकाओं की रचनाओं में सिर्फ यथार्थ वर्णन न होकर कहानी की गहराई में जाकर विश्लेषित करने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया वर्णित की गई है । व्यक्ति के अंदर कुछ न कुछ कमी रहती है । उन कमियों की वजह से व्यक्ति अपने मन के अंदर ही अंदर

कुछ ग्रंथियों-कुंठाओं का शिकार हो जाता है । उसके मन के अंदर विकार या विकृत मनःस्थितियों का निर्माण होता है । जब उसके अहम को ठेस पहुँचती है तब वह अलग रूप से पेश आता है । इन पात्रों के अंतःसंघर्ष को कथानक में देख सकते हैं । प्रस्तुत अध्याय में उभय कहानीकारों ने किस तरह से मनोवैज्ञानिक पहलूओं का वर्णन किया है, उस पर चर्चा करके विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

सप्तम अध्याय:ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा की कहानियों में भाषागत शिल्प :

सातवे अध्याय में उभय लेखिकाओं की रचनाओं में उभय रचनाकारों की भाषा को लेकर उनकी कृतियों में तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, अंग्रेज़ी शब्द, उर्दू, आदि शब्दों का प्रयोग सहज या उद्देश्यपूर्ण है कि नहीं आदि चर्चा की गई है । सरल एवं सहज भाषा का प्रयोग सायास है या आदतन इन सभी की चर्चा की गई हैं ।

उपसंहार :

उपसंहार में उपर्युक्त सभी अध्यायों को ध्यान में रखते हुए ममता कालिया एवं वर्षा अडालजा की कहानियों की वर्ण्य-विषयक विशेषताएँ, पात्र संबंधी विचार और अन्य परिवेश को ध्यान में रखते हुए तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । तुलनात्मक अनुसंधान द्वारा एक से अधिक भाषाओं के बीच में सांस्कृतिक सेतु बंध का कार्य हुआ है । यहाँ दो भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा निष्पन्न शोध की उपलब्धियों का अंकन किया गया है। शोध की उपलब्धियों के साथ-साथ शोधकार्य समन्वित चिंतन धारा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

इस शोधकार्य में जिन ग्रंथ और पत्रिकाओं मे से उद्धरणाए गए हैं और उसकी चर्चा की गई है उसकी सूचि अलग दी गई हैं ।

परिशिष्ट- ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व

परिशिष्ट के रूप में ममता कालिया तथा वर्षा अडालजा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित किया गया है । हर मनुष्य के अंदर दो प्रकार का व्यक्तित्व होता है- आंतरिक और बाह्य । बाह्य व्यक्तित्व पर असर करने वाले तत्व- व्यक्ति का जन्म, परिवार, बाल्यव्यवस्था, शिक्षा-नौकरी आदि की चर्चा की गई है । आंतरिक व्यक्तित्व पर असर करने वाले परिबळ हैं- साहित्यकार की अपनी विचारधारा तथा जीवन मूल्यों का प्रभाव देखा जाता है । इस बात को समझने के लिए उनकी रचना सृष्टि का अध्ययन किया गया है । यहाँ उभय लेखिकाओं की प्रेरणा शक्ति, पुरस्कार और सम्मान आदि की चर्चा की गई है । तदअनुसार उनकी अन्य कृतियों का ज़िक्र किया गया है ।

सामग्री संकलन सूत्र :-

शोध-कार्य के सोपानों में सामग्री संकलन प्रमुख सोपान है। उपलब्ध सामग्री जितनी पूर्ण, विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक हो, शोध-कार्य उतना ही उच्च कोटि एवं सफल माना जाता है। निम्नांकित सामग्री संकलन के स्रोतों द्वारा शोध-कार्य को स्तरीय बनाने का प्रयास किया गया है । कुछ कहानियाँ पुनः मुद्रित होने की वजह से एक ही बार ली गई है ।

आधार ग्रंथ सूचि

१. शोध-स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि डॉ. बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली-२०१५

२. ममता कालिया की कहानियाँ-खंड-१,ममता कालिया, वाणी प्रकाशन -नई दिल्ली-२००५

३. तुलनात्मक साहित्य-सिद्धांत अने विनियोग, डॉ. प्रसाद ब्ह्रहमभट्ट, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य

४. ममता कालिया की कहानियाँ खंड-२,ममता कालिया, वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली-२००५

५. थिएटर रोड के कौवे-कहानी संग्रह ममता कालिया, वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली-२००६

६. काके दी हट्टी-कहानी संग्रह ममता कालिया, वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली-२०१०

७. थोडा सा प्रगतिशील-कहानी संग्रह, ममता कालिया, लोक भारती प्रकाशन-नई दिल्ली

८. एंधाणी-कहानी संग्रह, वर्षा अडालजा, आर.आर.शेठ ब्रधर्स, मुंबई-१९८९

९. वर्षा अडालजानी श्रेष्ठ वार्ताओ -कहानी संग्रह, वर्षा अडालजा, आदर्श प्रकाशन-अहमदाबाद-२०१५

१०. हरिकथा अनंता-कहानी संग्रह, वर्षा अडालजा, आर.आर.शेठ ब्रधर्स, मुंबई-२०१७

११. स्वप्न प्रवेश-कहानी संग्रह, वर्षा अडालजा, आर.आर.शेठ ब्रधर्स, मुंबई-२०२०

संदर्भ ग्रंथ सूचि

१.ममता कालिया: जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. फ़ैमिदा बीजापुरे (शिवाजी विश्वाविद्यालय कोल्हापुर,विनय प्रकाशन, कानपुर-२००४)

२.स्त्री एवं सामाजिक प्रसंग-ममता कालिया का कथा साहित्य, पीटर शागि (केन्द्रीय विश्व विद्यालय,वर्धा महाराष्ट्र,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली-२०१८

३.शोर के विरूद्ध सृजन-ममता कालिया का रचना संसार, जितेन्द्र श्रीवास्तव-संपादक वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली -२०१७

४. भविष्य का स्त्री विमर्श, ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-२०१५

५.महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य डॉ. भारती शेळके,विद्या प्रकाशन, कानपुर-२००८

६.ममता कालिया के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, डॉ. पलक पटेल ज्ञान प्रकाशन, कानपुर-२०१९

७.नवें दशक की हिन्दी कहानियों में नारी परिकल्पना, डॉ. संगीता व्यास मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद-२००५

८.हिन्दी कथा साहित्य में रूढ़िमुक्त स्त्री,डॉ.सुधा बी. जवाहर पुस्तकालय-२०१०

९.राजेन्द्र यादव : कथा साहृत्य के विविध आयाम, डॉ. माधवी भंडारी, अलका प्रकाशन कानपुर-२००७

१०.नारी विमर्श की नयी दिशाएँ, डॉ. रेणुका मोरे, अलका प्रकाशन कानपुर-२०१०

११.कहानी का रचना शास्त्र डॉ. धनंजय वर्मा, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली-१९९८

१२.नारी विमर्श और अलका सरावगी का कथा साहित्य,डॉ. प्रीती त्रिवेदी, चिंतन प्रकाशन, कानपुर-२०१४

१३.अंतिम दशक की कहानियों में चित्रित विभिन्न परिवेश , डॉ. संजय मादार, जवाहर पुस्तकालय-२०१२

१४. कहानीकार निर्मल वर्मा और मधुराय-तुलनात्मक अध्ययन,डॉ. मधुकर पाडवीज्ञान प्रकाशन, कानपुर-२०१६

१५.वर्षा अडालजा का कथा साहित्य, डॉ. पंकज आर पटेल, आदर्श प्रकाशन, अहमदाबाद-२०११

१६. अर्वाचीन गुजराती साहित्य नो इतिहास, डॉ. रमेश त्रिवेदी आदर्श प्रकाश, अहमदाबाद-२००६

१७.टूंकी वार्ता अने बीजा लेखो, डॉ.जयंत पाठक, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद-२०००

१८. माटी नुं घर, वर्षा अडालजा,आर.आर.शेठ ब्रधर्स, मुंबई-२०१७

शोधार्थी :

भैरवी आर पंड्या

शोध निदेशक :

डॉ. श्रीधर हेगडे